समाजशास्त्रीय सिद्धांत: संघर्षवाद II

(Sociological Theory: Conflict Theory II)

डॉ. अनुराग कुमार पाण्डेय

सहायक प्रोफेसर

समाजशास्त्र विभाग

जे. एस. हिन्दू (पी. जी.) कॉलेज, अमरोहा

राल्फ डेहरेनडॉर्फ: कार्ल मार्क्स की आलोचना

- संघर्ष सदैव समाज का अंग रहेगा, चाहे किसी भी समाज/ व्यवस्था का आविर्भाव हो जाए।
- यदि पूंजी/ संपत्ति की समाप्ति हो जाएगी, तो क्रांति नहीं आ सकती।
- औद्योगिक समाज में कल्याणकारी राज्य की अवधारणा पायी जाती है।
- उच्च तथा निम्न के साथ ही मध्य वर्ग का भी उदय होगा।
- भविष्य में उच्च सामाजिक गतिशीलता व्याप्त होगी।
- स्तरीकरण दो रूपों में दिखाई देता है – सत्ता अथवा सत्ता संरचना तक पहुँच।

प्रमुख कृतियाँ

- *Class & Class Conflict in an Industrial Society*, 1959
- *Homo Sociologicus*, 1965
- *Conflict After Class*, 1967
- Out of Utopia, 1967
- *Society and Democracy in Germany*, 1967
- *Essays in the Theory of Society*, 1968
- *The Sociological Man,* 1973
- *The New Liberty*, 1975
- *Life Chances*, 1979

डेहरेनडॉर्फ तथा पारसन्स

टालकॉट पारसन्स	राल्फ डेहरेनडॉर्फ
प्रत्येक समाज एक अपेक्षाकृत स्थिर और स्थायी संरचना है।	प्रत्येक समाज अपने प्रत्येक बिंदु पर बदलता है।
प्रत्येक समाज एक अच्छी तरह से एकीकृत संरचना है।	प्रत्येक समाज अपने प्रत्येक बिंदु पर असहमति और संघर्ष से भरा होता है; सामाजिक संघर्ष सर्वव्यापी है।
समाज के प्रत्येक तत्व का एक निश्चित कार्य है, प्रणाली की स्थिरता में कुछ योगदान देता है।	समाज में प्रत्येक तत्व इसके विघटन और परिवर्तन में योगदान देता है।
कार्य करना सामाजिक संरचना स्थिरता और एकीकरण सुनिश्चित करने, समाज के सदस्यों की मूल्य सहमति पर आधारित है।	प्रत्येक समाज इस तथ्य पर आधारित होता है कि समाज के कुछ सदस्य दूसरों को आज्ञा मानने के लिए बाध्य करते हैं।

संघर्षवाद: राल्फ डेहरेनडॉर्फ

- *Class & Class Conflict in an Industrial Society*, 1959
- वर्ग एवं वर्ग द्वंद्वों के अध्ययन में जर्मन समाजशास्त्री राल्फ गुस्ताव डेहरेनडॉर्फ का महत्वपूर्ण योगदान है।
- डेहरेनडॉर्फ ने संघर्ष के संरचनात्मक कारणों को ढूँढने का प्रयत्न किया। उनके अनुसार आर्थिक संबंध ही संघर्ष का कारण नहीं है, अपितु शक्ति–सत्ता के संबंध भी संघर्ष को जन्म देते हैं।
- सत्ता संरचना प्रत्येक सामाजिक संगठन का एक अभिन्न भाग होती है; अनिवार्य रूप में स्वार्थ समूहों को संगठित करती है उन्हें निश्चित स्वरूप प्रदान करती है तथा इस रूप में संघर्ष की संभावनाओं को जन्म देती है।
- समाज में सत्ता का बँटवारा समान नहीं होता है, इसलिए संघर्ष होता है।
- अपने लिए अधिकाधिक सत्ता प्राप्त करना स्वयं में सम्मानजनक होता है तथा सत्ता के आधार पर ही यह निश्चित होता है कि अन्य के साथ उसका संबंध कैसा होगा।
- सत्ता से वंचित रह जाने वाले उसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं तथा जिनके पास सत्ता है वे उसे बनाए रखने का प्रयत्न करते हैं। इसी से टकराव अथवा संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है।

डेहरेनडॉर्फ: सत्ता की अवधारणा

- प्रत्येक व्यवस्था में दो प्रकार के सत्ता समूह होते हैं –
  - आधिपत्य धारक (Super–Ordinate): जो आदेश देते हैं।
  - अधीनस्थ (Sub–Ordinate): जो आदेशों का पालन करते हैं।
- सत्ता संबंधों में दो प्रकार के बुनियादी संघर्ष देखने को मिलते हैं –
  - जिनके पास शक्ति है।
  - जिनके पास शक्ति नहीं है।
- समाज का निर्माण कुछ इकाइयों से होता है, जिसे आदेश सूचक संस्थाएं (Imperatively Coordinated Associations: ICA) कहा जाता है। इसे हम सत्ता के संस्तरण द्वारा नियंत्रित व्यक्तियों के रूप में समझ सकते हैं। **शक्ति संबंधों पर आधारित संस्थागत समूह**
- दो प्रकार के हितों के कारण संघर्ष होता है –
  - सत्ताधारी समूह: सत्ता को बनाए रखने के हित से व्यवस्था को बनाए रखना चाहता है।
  - सत्ताविहीन समूह: सत्ता को प्राप्त करने के हित से व्यवस्था में परिवर्तन चाहता है।

संघर्षवाद: राल्फ डेहरेनडॉर्फ

- डेहरेनडॉर्फ का संघर्ष सिद्धांत मूलतः सत्ता संबंधों पर आधारित है।
- डेहरेनडॉर्फ का मत है कि संघर्ष का कारण सामाजिक संरचना में ही निहित होता है। (मैक्रो दृष्टिकोण)
- समाज का प्रत्येक भाग निरंतर परिवर्तित होता रहता है तथा इस परिवर्तन का मूल कारण वर्गों के मध्य होने वाला संघर्ष है।
- डेहरेनडॉर्फ के शब्दों में, *'संरचना में होने वाले परिवर्तन के विभिन्न तरीके वर्ग संघर्ष के विभिन्न तरीकों के साथ–साथ परिवर्तित होते रहते हैं। वर्ग संघर्ष जितना प्रचंड होगा, उतना ही अमूल परिवर्तन घटित होगा; वर्ग संघर्ष जितना अधिक हिंसक होगा, संरचना में उसके परिणामस्वरूप परिवर्तन भी उतने ही आकस्मिक होंगे।'*
- डेहरेनडॉर्फ मानते हैं कि समाज के दो पहलू होते हैं – संघर्ष (Conflict) तथा सामंजस्य/ मतैक्य (Consensus)। इन दोनों के बिना समाज का अस्तित्व संभव नहीं है। ये दोनों एक दूसरे की पूर्वआवश्यकताएँ हैं।
- संघर्ष तब तक उत्पन्न नहीं हो सकता, जब तक पहले थोड़ी बहुत मतैक्यता न हो। इसी प्रकार संघर्ष अंततः मतैक्यता एवं एकीकरण की ओर अग्रसर होता है।

संघर्षवाद: राल्फ डेहरेनडॉर्फ

- डेहरेनडॉर्फ के संघर्ष सिद्धांत का केंद्र सत्ता विभाजन है। सत्ता का विभिन्न रूप में वितरण अनिवार्यतः व्यवस्थित सामाजिक संघर्ष का निर्धारक कारक है।
- उन्होंने इस संदर्भ में, पदों के साथ जुड़ी सत्ता की मात्रा में भिन्नता को संघर्ष का प्रमुख तत्व माना है तथा व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक एवं व्यवहारात्मक विशेषताओं को संघर्ष के उत्पन्न करने में कोई महत्व नहीं दिया है।
- डेहरेनडॉर्फ के अनुसार सत्ता व्यक्ति के साथ नहीं, पदों के साथ जुड़ी होती है। अतः एक स्थिति में एक व्यक्ति के पास जो सत्ता है, आवश्यक नहीं दूसरी स्थिति में भी उसके पास सत्ता का कोई पद हो।
- सत्ता की स्थितियाँ ही हितों के संघर्ष को जन्म देती हैं तथा बाद में यही व्यापक संघर्ष का रूप धारण कर लेती है।
- हित के दो प्रकार होते हैं – व्यक्त तथा अव्यक्त। अचेतन भूमिका प्रत्याशाओं को अव्यक्त हित कहा है तथा जब अव्यक्त हित चेतन स्थिति में आ जाता है, तब वह व्यक्त हित बन जाता है।
- इसी संदर्भ में डेहरेनडॉर्फ तीन प्रकार के समूहों की चर्चा करते हैं – अर्द्ध (Quasi) समूह, हित (Interest) समूह तथा संघर्ष (Conflict) समूह।

संघर्षवाद: राल्फ डेहरेनडॉर्फ

- प्रत्येक सामाजिक संगठन में सत्ता का बँटवारा असमान होने के कारण परस्पर विरोधी स्वार्थ समूहों का निर्माण होना स्वाभाविक है तथा सत्ता की यह संरचना ही संघर्ष का एकमात्र आधार है।
- यही कारण है कि संघर्ष को सामाजिक जीवन से एकदम मिटा देना या समाप्त कर देना संभव नहीं है।
- डेहरेनडॉर्फ कहते हैं कि संघर्ष को अस्थाई रूप से या कुछ समय के लिए दबाया, नियमित, निर्देशित व नियंत्रित तो किया जा सकता है, परंतु इसे हमेशा के लिए समाप्त नहीं किया जा सकता। चूंकि सामाजिक संघर्ष स्वयं सामाजिक संगठन की प्रकृति में अंतर्निहित होता है, इस कारण उन्हें पूरी तरह से मिटाया नहीं जा सकता, केवल विशेष संदर्भों में उनकी अभिव्यक्तियों का निराकरण किया जा सकता है।

संघर्षवाद: लुडविग गुंप्लोविज

- *The Outlines of Sociology*, 1899
- गुंप्लोविज के 'समूह संघर्ष' सिद्धांत पर डार्विन व स्पेन्सर के विचारों का प्रभाव परिलक्षित होता है।
- इनके अनुसार मानव समूहों के परस्पर संबंधों में अंतर्निहित एवं व्याप्त घृणा का कारण ही संघर्ष की आधारशिला रखी जाती है, जो अपरिहार्य है।
- संघर्ष के दौरान विजेता समूह पराजितों का निर्दयता से शोषण करता है। विजेता समूह का पराजित समूह पर नियंत्रण रहता है।
- संघर्ष की प्रक्रिया द्वारा सामाजिक स्तरीकरण की स्थापना होती है।
- धीरे–धीरे विजयी तथा शोषित वर्ग में पारस्परिक निकटता व संपर्क के कारण दूरियाँ समाप्त हो जाती हैं तथा जन समूह एकीकृत हो जाते हैं। किन्तु कुछ समय बाद दूसरों समूहों के आक्रमण के कारण यह प्रक्रिया पुनः प्रारंभ हो जाती है।
- इस प्रकार गुंप्लोविज ने समूहों के संबंधों में पायी जाने वाली ईर्ष्या व तनाव को ही संघर्ष का आधार माना है।

Next Class:

समाजशास्त्रीय सिद्धांत: संघर्षवाद III

(Sociological Theory: Conflict Theory III)